सूरह — एक कहानी

# सूरह अज़-ज़ारियात

## बिखेरने वाली हवाएँ

पूरा सफ़र — मेहमान, हवाएँ, और तुम्हारे वुजूद की वजह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 51 • 60 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

वज़्-ज़ारियाति ज़र्वा। फ़ल्-हामिलाति विक़्रा
1-2. बिखेरने वाली (हवाओं) की क़सम। फिर बोझ उठाने वाली (बादलों) की।

व फ़िल्-अर्ज़ि आयातुल्-लिल्-मूक़िनीन। व फ़ी अन्फ़ुसिकुम, अ फ़-ला तुब्सिरून
20-21. और ज़मीन में यक़ीन वालों के लिए निशानियाँ हैं। और ख़ुद तुम में भी; तो क्या तुम देखते नहीं?

व फ़िस्-समा-इ रिज़्क़ुकुम व मा तू'अदून
22. और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है और वो भी जिसका तुमसे वादा किया जाता है।

फ़-फ़िर्रू इलल्-लाह। इन्नी लकुम मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन
50. तो अल्लाह की तरफ़ भागो। बेशक मैं तुम्हारे लिए उसकी तरफ़ से एक खुला डराने वाला हूँ।

व मा ख़लक़्तुल्-जिन्न वल्-इंस इल्ला लि-य'बुदून
56. और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए बनाया।

इन्नल्-लाह हुवर्-रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्-क़ुव्वतिल्-मतीन
58. बेशक अल्लाह ही रज़्ज़ाक़ है, बड़ी क़ुव्वत वाला, मज़बूत।

## चार चलती हुई क़समें

बेटा, ये सूरह चार क़समों से खुलती है, और हर एक किसी **चलती** हुई चीज़ को बयान करती है — और उलमा ने, अली (रज़ि0) के ज़माने से, उन्हें एक **वाहिद निज़ाम के चार मरहलों** के तौर पर समझाया।

'**वज़्-ज़ारियाति ज़र्वा** — उन की क़सम जो **बिखेरती** हैं, फैलाती हुई' — हवाएँ, धूल और बीज और बादल को उठाती और फैलाती हुई।

'**फ़ल्-हामिलाति विक़्रा** — और उन की जो भारी **बोझ उठाती** हैं' — बादल, आसमान के पार टनों पानी उठाते हुए।

'**फ़ल्-जारियाति युस्रा** — और उन की जो आसानी से **चलती** हैं' — समुंदर पर

सरकती कश्तियाँ, या ऊपर रवानी से दौड़ते बादल।

'**फ़ल्-मुक़स्सिमाति अम्रा** — और उन की जो एक हुक्म **बाँटती** हैं' — फ़रिश्ते, जो अल्लाह का फ़ैसला तक़सीम करते हैं।

बेटा, सिलसिला ग़ौर कीजिए: हवा पानी उठाती है, बादल उसे ले जाता है, वो वहाँ पहुँचता है जहाँ ज़रूरत है, और फ़रिश्ते उस फ़ैसले को बाँटते हैं जो इस सब पर हाकिम है। **चार आयतें, और रिज़्क़ की पूरी मशीन बयान हो गई** — वो अन-देखी तरतीब जो हर रोज़ आपकी प्लेट भरती है।

और ये क़समें किस लिए हैं? '**इन्नमा तू'अदून ल-सादिक़** — बेशक, जिसका तुमसे **वादा** किया जाता है वो **सच** है — **व इन्नद्-दीन ल-वाक़ि'** — और बेशक, **जज़ा (बदला) होने वाला** है।'

बेटा, दलील बारीक और ख़ूबसूरत है: वो ज़ात जो हवाओं और बादलों और तक़सीम का ये ठीक, क़ाबिल-ए-भरोसा निज़ाम चलाती है — क्या आप समझते हैं कि वो उस दिन के बारे में क़ाबिल-ए-भरोसा न होगा जिसका उसने वादा किया?

## ज़मीन को देखो, ख़ुद को देखो

फिर सूरह हमें ग़ौर करने को कहती है: '**व फ़िल्-अर्ज़ि आयातुल्-लिल्-मूक़िनीन** — और **ज़मीन** में **यक़ीन वालों** के लिए **निशानियाँ** हैं — **व फ़ी अन्फ़ुसिकुम** — **और ख़ुद तुम में** — **अ फ़-ला तुब्सिरून** — तो क्या तुम **देखते** नहीं?'

बेटा, तीन लफ़्ज़ जो एक पूरी उम्र ले सकते हैं: '**व फ़ी अन्फ़ुसिकुम**' — और **ख़ुद तुम में**।

आपको टेलिस्कोप या सफ़र की ज़रूरत नहीं। **सबूत आपकी अपनी खाल के अंदर है।** एक दिल जो आपकी इजाज़त के बग़ैर आपकी पैदाइश से पहले से धड़क रहा है। एक ज़ख़्म जो ख़ुद बंद हो जाता है। खाना जो ख़ून, हड्डी और सोच बन जाता है। दो आँखें जो अँधेरे में ख़ुद को ढालती हैं। एक याददाश्त जो एक चेहरे को चालीस साल सँभालती

है।

बेटा, और एक गहरी क़िराअत भी है: **ख़ुद को देखो** — अपने मिज़ाजों को, अपनी कमज़ोरी को, कितनी जल्दी आप घबराते हैं और कितनी जल्दी भूल जाते हैं। **ख़ुद को ईमानदारी से जानना अपने रब को जानने के सब से पुख़्ता रास्तों में से एक है।**

और फिर वो आयत जिसने तारीख़ के हर फ़िक्रमंद कमाने वाले को तसल्ली दी: '**व फ़िस्-समा-इ रिज़्क़ुकुम व मा तू'अदून** — और **आसमान** में **तुम्हारा रिज़्क़** है, और वो भी जिसका तुमसे **वादा** किया जाता है।'

बेटा, इसका मतलब समझिए: आपका रिज़्क़ **ऊपर** से तय होता है, बॉस के मूड से नहीं, बाज़ार से नहीं। ज़मीन पर बस उसके **पाइप** हैं। **पाइप चलाइए** — काम कीजिए, मेहनत कीजिए — मगर **पाइप को कभी मत पूजिए**, और उस आदमी से कभी मत डरिए जो सिर्फ़ एक पाइप है।

और फिर अल्लाह उस पर क़सम खाते हैं — और ये क़ुरआन की सब से ज़ोरदार क़समों में से है: '**फ़-व रब्बिस्-समा-इ वल्-अर्ज़ि इन्नहू ल-हक़्क़** — तो आसमान और ज़मीन के **रब की क़सम**, बेशक ये **हक़** है — **मिस्ल मा अन्नकुम तन्तिक़ून** — **ठीक उसी तरह जैसे तुम बोलते हो।**'

बेटा, इस तशबीह पर रुक जाइए। आप अपनी आवाज़ पर शक नहीं करते। आप ये साबित करने की कोशिश नहीं करते कि आप बोल सकते हैं — आप बस बोलते हैं। और अल्लाह फ़रमाते हैं: **मेरा वादा उतना ही यक़ीनी है जितना तुम्हारा अपना बोलना।**

## इब्राहीम के मोअज़्ज़ज़ मेहमान

और अब, बेटा, सूरह एक कहानी सुनाती है — और ये **मेहमान-नवाज़ी** के मौज़ू पर क़ुरआन की सब से सबक़-आमोज़ कहानियों में से एक है।

'**हल अताक हदीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन** — क्या तुम तक इब्राहीम के **मोअज़्ज़ज़ मेहमानों** की कहानी पहुँची?'

बेटा, बयान ग़ौर कीजिए: '**अल-मुक़्रमीन**' — मोअज़्ज़ज़। वो फ़रिश्ते थे, मगर इब्राहीम (अलैहि0) ये नहीं जानते थे। उन के लिए वो **अजनबी** थे जो अंदर चले आए।

'इज़ दख़लू 'अलैहि फ़-क़ालू सलामा — जब वो उसके पास दाख़िल हुए और बोले: **सलाम।** क़ाल सलामुन — उसने कहा: **सलाम** — क़ौमुम्-मुन्करून — एक अनजान क़ौम।'

और अब उसकी हर एक चीज़ देखिए, बेटा, क्योंकि उलमा ने **मेज़बानी के पूरे आदाब** इन आयतों से निकाले हैं:

'**फ़-राग़ इला अह्लिही** — फिर वो **चुपके से** अपने घर वालों की तरफ़ **गया**।' 'राग़' का मतलब छुप कर खिसक जाना। उसने एलान नहीं किया *'मैं तुम्हारे लिए खाना तैयार करता हूँ* — क्योंकि इससे मेहमान एहसान-मंद हो जाता और उसे इनकार का मौक़ा मिलता। **उसने चुपके से इजाज़त ली।**

'**फ़-जा-अ बि-'इज्लिन समीन** — और वो एक **मोटा बछड़ा** ले **आया**।' कोई नाश्ता नहीं। बचा-खुचा नहीं। **उसका बेहतरीन जानवर, और पूरा।** और ग़ौर कीजिए: वो उसे **ले कर आया** — ख़ुद लाया; उसने किसी नौकर को नहीं भेजा।

'**फ़-क़र्रबहू इलैहिम** — फिर उसे **उन के क़रीब रखा।**' वो खाना उन तक लाया बजाए इसके कि उन्हें दस्तरख़्वान की तरफ़ बुलाता। बेटा, यही इज़्ज़त है: **आप खाना अपने मेहमान की तरफ़ ले जाते हैं, अपने मेहमान को खाने की तरफ़ नहीं।**

'**क़ाल अ ला त'कुलून** — उसने कहा: **क्या तुम न खाओगे?**' — नरमी से, मुतालबा करते हुए नहीं।

बेटा, आदाब गिनिए: **रफ़्तार, तैयारी में राज़दारी, जो था उस में से बेहतरीन, ख़ुद पेश करना, उसे क़रीब लाना, और एक नरम दावत।** ये वो मेयार है जो हमारे बाप इब्राहीम ने रखा — और वो एक बूढ़े थे, एक नबी, और इतने दौलत-मंद कि उनके नौकर थे।

'फ़-औजस मिन्हुम ख़ीफ़ह — फिर उसने उन से एक **ख़ौफ़** महसूस किया' — क्योंकि उन्होंने न खाया, और अरबों में एक मेहमान जो खाना ठुकरा दे वो नुक़सान का इरादा रखता हो सकता है। 'क़ालू ला तख़फ़ — उन्होंने कहा: **डरो मत** — व बश्शरूहु बि-ग़ुलामिन 'अलीम — और उन्हें एक **इल्म वाले लड़के** की **ख़ुशख़बरी** दी।'

'फ़-अक़्बलतिम्-र-अतुहू फ़ी सर्रीतिन फ़-सक्कत वज्हहा व क़ालत 'अजूज़ुन 'अक़ीम — फिर उसकी बीवी एक **चीख़** के साथ आई, और अपना **चेहरा पीटा** और कहा: एक **बूढ़ी बाँझ** औरत!'

बेटा, क्या इंसानी लम्हा — क़ुरआन में नरमी के साथ दर्ज, तन्क़ीद के साथ नहीं। एक बूढ़ी औरत, उसे वो ख़बर दी गई जिसकी वो उम्मीद छोड़ चुकी थी, ना-यक़ीनी से रद्द-ए-अमल करती है और अपना ही चेहरा पीटती है।

और जवाब: '**कज़ालिकि क़ाल रब्बुकि** — **ऐसे ही तुम्हारे रब ने फ़रमाया** — इन्नहू हुवल्-हकीमुल्-'अलीम — बेशक, वो हिकमत वाला, जानने वाला है।'

बेटा, **उस जवाब को याद रखिए** जब आपकी अपनी सूरत-ए-हाल जिस्मानी, माशी या अमली तौर पर ना-मुमकिन लगे: '**कज़ालिकि क़ाल रब्बुक**' — ऐसे ही तुम्हारे रब ने फ़रमाया। **जब वो कहते हैं, तो ना-मुमकिन बस एक तफ़सील है।**

और फिर मेहमानों ने अपना मिशन ज़ाहिर किया: वो लूत की क़ौम की तरफ़ जा रहे थे। और अल्लाह कहते हैं: 'फ़-अख़्रज्ना मन कान फ़ीहा मिनल्-मु'मिनीन — तो हमने जो भी उस में **मोमिन** था निकाल लिया — फ़-मा वजद्ना फ़ीहा ग़ैर बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन — मगर हमने उस में **एक घर** के सिवा मुसलमानों का कोई न पाया।'

बेटा, **एक घर। एक पूरे शहर में।** और वो एक घर बचा लिया गया। **कभी ये मत समझो कि थोड़े होना ग़लत होना है** — और कभी ये मत समझो कि अल्लाह एक ख़राब जगह में मोमिनीन की छोटी अक़लियत को नज़र-अंदाज़ करते हैं।

# वो क़ौमें जो न छोड़ी गईं

फिर सूरह तेज़ रफ़्तारी से तारीख़ से गुज़रती है, बेटा, एक के बाद एक बजाई गई तंबीहों के सिलसिले की तरह।

**मूसा और फ़िरऔन:** अल्लाह ने उन्हें खुली दलील के साथ भेजा, 'फ़-तवल्ला बि-रुक्निही — मगर वो अपनी **क़ुव्वत** के साथ मुँह फेर गया — व क़ाल साहिरुन औ मज्नून — और कहा: **जादूगर या दीवाना।**' बेटा, वही दो लफ़्ज़ जो हर नबी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल हुए। और अंजाम: 'फ़-अख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-नबज़्नाहुम फ़िल्-यम्म — तो हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ा और उन्हें **समुंदर** में **फेंक** दिया।'

**'आद:** 'इज़ अर्सल्ना 'अलैहिमुर्-रीहल्-'अक़ीम — हमने उन पर **बाँझ हवा** भेजी।' बेटा, "अक़ीम' — बाँझ, बे-समर: एक ऐसी हवा जो कोई बारिश, कोई फ़ायदा, कोई ज़िंदगी न लाई — **सिर्फ़ तबाही।** 'मा तज़रु मिन शै-इन अतत 'अलैहि इल्ला ज'अलत्हु कर्-रमीम — जिस चीज़ पर भी आई उसे चूर-चूर खंडर बना कर छोड़ा।'

**समूद:** 'फ़-'अतौ 'अन अम्रि रब्बिहिम फ़-अख़ज़त्हुमुस्-सा'इक़ह — उन्होंने अपने रब के हुक्म की ना-फ़रमानी की, तो **कड़क** ने उन्हें पकड़ लिया — **व हुम यन्ज़ुरुन** — जब कि वो **देख** रहे थे।' बेटा, **उन्होंने उसे आते देखा।** 'फ़-मस्तता'ऊ मिन क़ियामिंव्-व मा कानू मुन्तसिरीन — वो न **खड़े** हो सके, न अपना दिफ़ा कर सके।'

और उन से पहले **नूह** की क़ौम, जो 'एक ना-फ़रमान क़ौम' थी।

फिर, बेटा, वो आयत जो आपकी नज़र खंडरों से आसमान की तरफ़ उठाती है: '**वस्-समा-अ बनैनाहा बि-अय्दिंव्-व इन्ना ल-मूसि'ऊन** — और **आसमान** हमने **क़ुव्वत** से **बनाया**, और बेशक, **हम (उसे) फैलाने वाले हैं।**'

'**वल्-अर्ज़ फ़रश्नाहा फ़-नि'मल्-माहिदून** — और **ज़मीन** हमने **बिछाई** — और क्या ही **अच्छे** हैं हम जिन्होंने बिछाया।' बेटा, 'फ़रश' **बिस्तर** या ग़लीचे के लिए लफ़्ज़ है — ज़मीन आपके लिए बिस्तर की तरह तैयार की गई।

'**व मिन कुल्लि शै-इन ख़लक़्ना ज़ौजैनि ल'अल्लकुम तज़क्करून** — और **हर चीज़** के हमने **जोड़े** बनाए, ताकि तुम याद करो।' हर चीज़ जोड़ों में, बेटा — मर्द और औरत, मुसबत और मनफ़ी, रात और दिन, मीठा और कड़वा — **और जिसने सारे जोड़े बनाए वो ख़ुद अहद है, बिना जोड़े के।**

'**फ़-फ़िर्रू इलल्लाह** — **तो अल्लाह की तरफ़ भागो!** इन्नी लकुम मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन — बेशक, मैं तुम्हारे लिए उसकी तरफ़ से एक खुला डराने वाला हूँ।'

बेटा, '**फ़िर्रू इलल्लाह**' — अल्लाह की तरफ़ **भागो**। क्या हुक्म है। 'चलो' नहीं, 'आओ' नहीं — **भागो, दौड़ो**, जैसे एक शख़्स ख़तरे से दौड़ता है। और उलमा वो ख़ूबसूरत तज़ाद ग़ौर करते हैं: आम तौर पर आप **किसी चीज़ से** महफ़ूज़ जगह की तरफ़ भागते हैं। यहाँ आप अल्लाह के अज़ाब **से** ख़ुद **अल्लाह की तरफ़** भागते हैं। **कहीं और भागने की जगह ही नहीं, और कभी न थी।**

## तुम क्यों हो

और अब, बेटा, हम उस आयत तक पहुँचते हैं जो सब से बड़ा सवाल जवाब देती है जो कोई इंसान पूछ सकता है — और ये नौ लफ़्ज़ों में बयान है:

'**व मा ख़लक़्तुल्-जिन्न वल्-इंस इल्ला लि-य'बुदून** — **और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए बनाया।**'

बेटा, हर फ़लसफ़ी जो कभी जिया इंसानी वुजूद के मक़सद पर जूझता रहा। **ये रहा, उस ज़ात से जिसने तख़्लीक़ की।**

और 'लि-य'बुदून' को ठीक समझिए, क्योंकि ज़्यादातर लोग इसे बहुत तंग पढ़ते हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने इसे समझाया: **सिवाए ये कि मुझे जानें।** क्योंकि इबादत, ये जाने बग़ैर कि आप किस की इबादत कर रहे हैं, **ख़ाली हरकत** है।

और 'इबादह' सिर्फ़ जा-नमाज़ तक महदूद नहीं, बेटा। उलमा ने इसे एक जामे' इस्तिलाह बताया **हर उस चीज़ के लिए जिसे अल्लाह पसंद करते और जिस से राज़ी होते हैं**, अल्फ़ाज़ और आमाल, अंदर और बाहर।

तो आपका ईमानदार काम इबादत है जब वो उसके लिए किया जाए। अपने वालिदैन से भलाई इबादत है। अपने ख़ानदान को हलाल कमाई से खिलाना इबादत है। किसी को देख कर मुस्कुराना इबादत है। **सोना तक**, इस नीयत से कि फ़ज्र के लिए ताज़ा उठें, इबादत बन जाता है।

तो आयत ये नहीं कह रही *'मैंने तुम्हें मस्जिद में ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बनाया'*। ये कह रही है: **मैंने तुम्हें अपनी पूरी ज़िंदगी मेरे लिए जीने के लिए बनाया।**

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो एक ऐसे सवाल का जवाब देती है जो आ सकता है: **क्या अल्लाह को हमारी इबादत की ज़रूरत है?**

'**मा उरीदु मिन्हुम मिर्-रिज़्क़िंव्-व मा उरीदु अंय्-युत्'इमून** — मैं उन से कोई **रिज़्क़** नहीं **चाहता**, न चाहता हूँ कि वो मुझे **खिलाएँ।**'

बेटा, ये इंक़िलाबी था। मक्का का हर बुत खिलाया और तेल लगाया और पहनाया जाता। हर क़दीम मज़हब अपने ख़ुदाओं को खाना पेश करता। **और अल्लाह एलान करते हैं: मैं तुम से कुछ नहीं चाहता।**

'**इन्नल्लाह हुवर्-रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्-क़ुव्वतिल्-मतीन** — बेशक, **अल्लाह ही अर-रज़्ज़ाक़** है — रिज़्क़ देने वाला — **ज़ुल्-क़ुव्वतिल्-मतीन** — क़ुव्वत वाला, मज़बूत।'

बेटा, इस जवाब का हुस्न देखिए। आप पूछ सकते हैं: *अगर इबादत उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं देती, तो मैं उसे क्यों करूँ?* और जवाब **नाम** में है: **वो रज़्ज़ाक़ हैं।** उन्हें आपकी ख़िदमत की ज़रूरत नहीं — **आपको ताल्लुक़ की ज़रूरत है।** इबादत कोई टैक्स नहीं जो आप अल्लाह को अदा करते हैं; **ये आपकी अपनी रूह की ग़िज़ा है।**

बेटा, तो ये सूरह हमें हवाओं से जो बादल उठाती हैं, हमारे अपने जिस्मों के अंदर की निशानियों तक, अजनबियों को पेश किए बछड़े तक, तबाह की गई क़ौमों तक, आसमान के फैलाए जाने तक ले गई — और ये सब से सादे जुमले पर उतरती है: **मैंने तुम्हें अपनी इबादत के लिए बनाया।**

**आपकी ज़िंदगी की बाक़ी हर चीज़ इंतिज़ाम है। मक़सद यही है।**

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** वो निज़ाम जो तुम्हें खिलाता है — हवा, बादल, तक़सीम — ठीक और क़ाबिल-ए-भरोसा है; जो इसे चलाता है वो अपने वादे के बारे में ना-क़ाबिल-ए-भरोसा न होगा।

**2.** 'और ख़ुद तुम में' — सब से पुख़्ता सबूत जिसे तुम कभी जाँचोगे वो तुम्हारा अपना जिस्म और तुम्हारी अपनी कमज़ोरी है।

**3.** तुम्हारा रिज़्क़ आसमान में है: पाइप चलाओ, उसे कभी मत पूजो, और उस आदमी से कभी मत डरो जो सिर्फ़ एक पाइप है।

**4.** इब्राहीम (अलैहि0) से मेहमान-नवाज़ी सीखो: चुपके से खिसको, अपना बेहतरीन लाओ, ख़ुद पेश करो, उन के क़रीब रखो, नरमी से दावत दो।

**5.** जब तुम्हारी सूरत-ए-हाल ना-मुमकिन लगे, सारा का जवाब याद रखो: 'ऐसे ही तुम्हारे रब ने फ़रमाया।'

**6.** 'फ़िर्रू इलल्लाह' — अल्लाह की तरफ़ भागो; कभी कहीं और भागने की जगह थी ही नहीं।

**7.** तुम उसकी इबादत के लिए बनाए गए — और उन्हें उस से कुछ नहीं चाहिए; इबादत तुम्हारी अपनी रूह की ग़िज़ा है।

या रज़्ज़ाक़, हमारी रूहों को यूँ खिलाइए जैसे आप हमारे जिस्मों को खिलाते हैं, और हमारी पूरी ज़िंदगियों को आपकी इबादत बना दीजिए। आमीन।